PATNA WOMEN'S COLLEGE 1940

Hindi

Explore–Journal of Research for UG and PG Students
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

'कफन' और प्रेमचंद की सामाजिक चेतना

• स्वीटी कुमारी • पुष्पा • शालिनी मिश्रा
• शरण सहेली

Received : November 2012
Accepted : March 2013
Corresponding Author : Sharan Saheli

Abstract : मुंशी प्रेमचंद जीवन तथा साहित्य के सूक्ष्मदर्शी तथा दूरदर्शी साहित्यकार थे। उनकी रचनाओं में वर्तमान के चित्रण के साथ-साथ भविष्य का संकेत भी मिलता है। 'कफन' उनकी एक ऐसी ही रचना है। इस कथा में प्रेमचंद ने घीसू - माधव का अमानवीकरण *(De-humanization)* **किया गया है। जिस प्रकार घीसू - माधव के सामने जल रही अलाव अग्निशून्य है, उसी प्रकार उन दोनों का हृदय भी संवेदनाशून्य है। उनकी यही संवेदनहीनता उनसे पशुवत व्यवहार करवाती है और बुधिया की जीवन लीला प्रसव-पीड़ा के कारण समाप्त हो जाती है। दोनों 'कफन' के पैसों को पूड़ियों तथा शराब में उड़ा देते हैं। वे सामाजिक आडंबरों के विरोधी भी हैं। उनका यही विरोध भावी पीढ़ी के लिए एक संकेत है कि आज विरोध का यह स्वर धीमा अवश्य है, परन्तु भविष्य में यह स्वर और प्रखर तथा संगठित रूप में समाज के सामने आएगा।**

संकेत शब्दः- साहित्यिक अवदान, सामाजिक चेतना, दलित अस्मिता, धर्मान्धता, युगांतकारी

स्वीटी कुमारी
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2010–2013), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

पुष्पा
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2010–2013), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

शालिनी मिश्रा
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2010–2013), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

शरण सहेली
एसोसिएट प्रोफेसर-सह-अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, पटना वीमेंस कॉलेज,
बेली रोड, पटना – 800 001, बिहार, भारत
E-mail : sharansaheli@gmail.com

भूमिका :

''सच्चा साहित्य कभी पुराना नहीं होता। वह सदा नया बना रहता है। दर्शन और विज्ञान समय की गति के अनुसार बदलते रहते हैं, पर साहित्य तो हृदय की वस्तु है और मानव-हृदय में तबदीलियाँ नहीं होतीं।'' (प्रेमचंद, 95)

प्रत्येक रचना अपने युग से प्रभावित होती है। साहित्यकार युग द्रष्टा हीं नहीं युग स्रष्टा भी होता है। प्रेमचंद के साहित्यिक अवदान के विश्लेषण के आधार पर यही कहा जा सकता है कि कथा-सम्राट मुंशी प्रेमचंद सामाजिक क्रांति के अग्रदूत थे। वे परिवर्तनकामी लेखक थे। प्रेमचंद की कहानियों में उनके युग की धड़कन सुनाई पड़ती है। 'कफन' एक जमीनी कहानी है। आरंभिक काल से साहित्य मनोरंजन का साधन मात्र था परंतु प्रेमचंद ने हिन्दी कथा-साहित्य को मनोरंजन के स्तर से ऊपर उठाकर जीवन के सार्थक संदर्भों से जोड़ा। उस युग की तत्कालीन समस्याएं अनेक थीं-पराधीनता, जमींदारों-महाजनों